

**अनिद्र वि.** (तत्.) निद्रारहित, बिना नींद का, जिसे नींद न आए; जागरूक पुं. अनिद्रा।

**अनिद्रा स्त्री.** (तत्.) 1. नींद न आने की स्थिति या रोग 2. जागृत स्थिति, तत्परता।

**अनिद्रित वि.** (तत्.) जो सोया हुआ न हो, जागा हुआ।

**अनिधिक वि.** (तत्.) [अ+निधिक] 1. जो (संस्था/कंपनी आदि) निधि पर आधारित न हो। 2. जो किसी वस्तु या विषय का बहुत बड़ा आधार न हो। अर्थ. जो (योजना) किसी निधि (कोष) से संबंधित होकर संचालित न हो। अथवा जिसका संबंध किसी स्थापित निधि या कोष से न हो।

**अनिधिक-ऋण पुं.** (तत्.) अर्थ. एक प्रकार का वह ऋण जो कोई विशिष्ट निधि स्थापित किये बिना सार्वजनिक रूप से दिया जाता है टि. सार्वजनिक ऋण प्रतिदेय और अप्रतिदेय दो प्रकार का होता है, अप्रतिदेय ऋण में सरकार ऋण न देकर केवल ऋणदाता को अवधि पर देय ब्याज देती है, प्रतिदेय ऋण निधिक या अनिधिक होता है, अनिधिक ऋण का भुगतान अवधि पूरी होने पर या उसका समय आने पर आय से कर दिया जाता है, जबकि निधिक ऋण में सरकार एक निधि कोष में आय का इतना भाग जमा करती जाती है कि ऋण भुगतान की तिथि आने पर पूर्ण भुगतान की राशि जोड़कर ऋणदाता को दी जाती है।

**अनिपुण वि.** (तत्.) [अ+निपुण] जो (किसी विषय में) निपुणता न रखता हो। अकुशल-अप्रवीण। **बिना. निपुण।**

**अनिबद्ध वि.** (तत्.) जो बँधान हो, अबद्ध, असंबद्ध, बेसिलसिला।

**अनिबद्ध रचना स्त्री.** (तत्.) गायन-वादन (अर्थात् संगीत) की ऐसी रचना जो तालबद्ध नहीं होती।

**अनिबाध वि.** (तत्.) बाधारहित, स्वच्छंद, जिसे कोई बाधा न हो, पुं. (तत्.) स्वच्छंदता, मुक्तता।

**अनिभूत वि.** (तत्.) 1. जो निभूत अर्थात् गुपचुप न हो, जो छिपा न हो, प्रकाशित, सर्वज्ञात 2. ढीठ, धृष्ट।

**अनिमंत्रित वि.** (तत्.) जिसे निमंत्रित न किया गया हो, बिना बुलाया हुआ।

**अनिमित्त वि.** (तत्.) [अ+निमित्त] 1. जो बिना किसी निमित्त के हो, निमित्त रहित, निर्हेतुक कारण रहित, उद्देश्य रहित पुं. अपशकुन 2. बहाना क्रि.वि. बिना किसी उद्देश्य के, वह अनिमित्त ही वहाँ आया था।

**अनिमिष वि.** (तत्.) [अ+निमिष] 1. बिना पलक झपाये (देखने वाला) अपलक 2. सजग, जागरूक क्रि.वि. एकटक=वह अनिमिष देख रहा पुं. 1. सुर, देव 2. मछली।

**अनिमिषदृष्टि वि.** (तत्.) [अनिमिष+दृष्टि] 1. बिना पलक झपकाये नेत्रों से देखने वाला 2. एकटकी नजर वाला।

**अनिमिषनयन वि.** (तत्.) दे. अनिमिष दृष्टि।

**अनिमेष वि.** (तत्.) 1. अर्थात् पलक झपकाए बिना, निर्निमेष, टकटकी लगाए हुए, स्थिर-दृष्टि क्रि.वि. (तत्.) बिना पलक गिराए, एकटक पुं. (तत्.) 1. देवता 2. मछली 3. विष्णु 4. महाकाल।

**अनियंत्रण पुं.** (तत्.) 1. किसी प्रकार के नियंत्रण (नियम/बंधन) का अभाव 2. वि. जो बिना नियंत्रण के हो 3. किसी प्रकार के प्रतिबंध/नियम को न मानने वाला, स्वेच्छाचारी 4. उच्छृंखल जैसे-अनियंत्रण कार्य।

**अनियंत्रित वि.** (तत्.) 1. नियंत्रण-रहित, बे रोकटोक, मनमाना, स्वच्छंद, निरंकुश।

**अनियंत्रित शासन पुं.** (तत्.) 1. वह शासन या सरकार जो किसी प्रकार के विधि-नियमों आदि के नियंत्रण में व्यवस्थित न हो 2. बिना किसी नियंत्रण का शासन, निरंकुश सत्ता।

**अनियत वि.** (तत्.) 1. जो नियत न हो, अनिश्चित, अनिर्धारित 2. अस्थिर, जिसका ठिकाना न हो 3. अनियमित 4. अकारण।

**अनियतकालिक वि.** (तत्.) [अनियत+कालिक] 1. नियत काल में न होने वाला 2. जिस किसी कार्य के संपादन में काल (समय-अवधि) नियत न हो, अनियतकालिक प्रदर्शनी।